ऑनलाइन पाठ्य सामग्री
वर्ग - स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
सत्र - 2020-23
पत्र - प्रथम
शीर्षक - हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा और नामवर सिंह

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा और नामवर सिंह

पहली बार नामवर सिंह ने 'साहित्य और इतिहास दृष्टि' नामक पुस्तक में हिन्दी साहित्य की इतिहास-दृष्टि के प्रश्न पर विचार करते हुए आचार्य शुक्ल, आचार्य द्विवेदी और रामविलास शर्मा की इतिहास-दृष्टि के समन्वय पर बल दिया कि की इतिहास-दृष्टि के समन्वय पर बल दिया और यह बताने की कोशिश की कि किस प्रकार आचार्य द्विवेदी आचार्य शुक्ल की इतिहास-दृष्टि को विकसित करते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा को समृद्ध करते हैं। साथ ही रामविलास शर्मा मार्क्सवादी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में उसकी कमियों को दूर करते हुए उसे पूर्णता प्रदान करते हैं।

नामवर सिंह को इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'छायावाद' और 'आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ' के जरिए आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन के संदर्भ में मौजूद विवादों में सशक्त हस्तक्षेप किया। वे एक ओर छायावाद को द्विवेदीयुगीन स्वच्छंदतावाद की तार्किक परिणति बताते हैं तो दूसरी ओर छायावाद

को उस सांस्कृतिक जागरण की भावात्मक अभिव्यक्ति मानते हैं जिसका आविर्भाव एक ओर विदेशी पराधीनता के खिलाफ हुआ, तो दूसरी ओर क्रमागत रूढ़ियों के खिलाफ। यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें वे छायावाद की राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में नवीन व्याख्या करते हैं। इसी प्रकार प्रगतिवाद पर चर्चा के क्रम में वे ~~प्रगतिशील~~ प्रगतिशील चेतना और प्रगतिवादी चेतना के भेद को निरर्थक मानते हुए प्रगतिवाद का राष्ट्रीय आंदोलन के साथ संबंध स्थापित करते हैं। वे ऐसे समय में प्रयोगवाद को रूपवाद का पर्याय माने जाने का विरोध करते हैं जब प्रगतिवादी आलोचकों द्वारा प्रयोगवादी कविता को रूपवादी कविता कहकर खिल्ली उड़ाई जा रही थी। उनकी दृष्टि में प्रयोगवाद में रूपवाद का आग्रह तो है, लेकिन प्रयोगवाद रूपवाद तक सीमित नहीं है। 'कविता के नए प्रतिमान' के जरिए वे नई कविता आंदोलन पर विचार करते हैं। निश्चय ही आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रति संतुलित दृष्टि के निर्माण में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
पी० जी० एम० एम० कॉलेज, कोनी
ललित नारायण मिथिला विवि, दरभंगा